

Padma Shri



SHRI JAVED AHMAD TAK

Shri Javed Ahmad Tak, the specially-abled social worker, wheelchair-ridden after receiving a spinal injury in a militant attack, lives by the motto “Be A Part, Not Apart”. He has been working with specially-abled children for the last two decades.

2. Born on 1st January, 1974, in Saraf Mohalla Bijbehara of district Anantnag, Shri Tak lived a simple life in a middle class family. After completing class 12th, he got admitted to Government Degree College (Boys) Khanabal Anantnag for Bachelor's Degree in Science. He was the student of final year of B. Sc Degree when life presented him a challenge. He was hit by bullet in spine in Kashmir conflict and lost some vital organs of the body with severe spinal cord injury. His life was confined to bed and mobile only with the help of wheelchair.

3. Shri Tak started his new life with children in his locality belonging to economically poor families or labour class with free tuitions from his bed. He registered an NGO namely Humanity Welfare organization Helpline with the objective of safeguarding rights of persons with disabilities in Jammu and Kashmir and enabling persons with disabilities through education. In 2008, he started a school for children with disabilities. He gave formal education to 200 children with various disabilities. He got constructed 100% accessible Developmental centers for persons with disabilities.

4. Shri Tak's untiring efforts resulted in various achievements to his credit. Some of which are - 3% reservation in employment implementation through recruiting agencies like JKPS, JKSSB and District level jobs; 50% fee concession to disable educated youth in submission of forms in Public Service Commission; enhancement of Conveyance allowance for government employee with disabilities increased from Rupees 200 to 1000; creation of post of Full time Disability Commissioner approved by the Governor of Jammu and Kashmir; his advocacy directly or indirectly affected two lakh persons with disability; formation of draft policy for persons with disabilities in context of PIL filed in Jammu and Kashmir high Court and provision of scribe for blind and upper limb disabled aspirants for appearing in competitive exams etc.

5. Shri Tak has been honoured with several awards and decorations for his contributions. These include National Award for Welfare of person with disabilities in 2004; Tak Zainagiri Memorial Award in 2005-2006 by Yateem Trust Jammu and Kashmir; Jammu and Kashmir State Award for Social Reforms and Empowerment in 2007; The NCPEDP Shell Helen Keller Award in 2007; Servant of the Poor Award in 2009 by Confederation of NGO's in Rural India, New Delhi; Award for Eminence in 2009 by Ability Foundation Chennai; Dr. Batras Positive Health Award 2012, New Delhi; Best Social Worker Award by Dist. Administration on Eve of Republic day 2015; Bharat Jyoti Award 2015 by India International Friendship Society, New Delhi; and Viklaanjan Swabhimaan Sammaan in 2016 by Swaraj Viklanjan Sewa samiti Allahabad .



श्री जावेद अहमद टाक

श्री जावेद अहमद टाक एक आतंकी हमले में रीढ़ की हड्डी में चोट लगने के कारण व्हीलचेयर से चलने-फिरने वाले दिव्यांग सामाजिक कार्यकर्ता "भिन्न नहीं, अभिन्न हैं" के सिद्धांत के साथ जीते हैं। वह पिछले दो दशकों से दिव्यांग बच्चों के लिए कार्य कर रहे हैं।

2. 1 जनवरी 1974 को, अनंतनाग जिले के सराफ मोहल्ला बिजबेहड़ा में जन्मे श्री टाक ने एक मध्यवर्गीय परिवार में सादा जीवन व्यतीत किया। 12वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात, उन्होंने विज्ञान में स्नातक उपाधि हेतु गर्वनमेंट डिग्री कॉलेज (बॉयज) खानाबल अनंतनाग में दाखिला लिया। वह बी.एससी के अंतिम वर्ष के छात्र थे जब उन्हें अपने जीवन में एक चुनौतीपूर्ण हादसे का सामना करना पड़ा। कश्मीरी संघर्ष के दौरान उनकी रीढ़ की हड्डी में गोली लगी और इस गंभीर चोट के कारण उनके शरीर के कुछ महत्वपूर्ण अंगों ने काम करना बंद कर दिया। उनका जीवन बिस्तर तक सिमटकर रह गया और वह केवल व्हीलचेयर की सहायता से चल-फिर पाते थे।

3. श्री टाक ने बिस्तर से ही अपने नए जीवन की शुरुआत की और वह अपने आसपास के आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों और मजदूरों के बच्चों को निःशुल्क ट्यूशन पढ़ाने लगे। उन्होंने जम्मू और कश्मीर में दिव्यांगजनों के अधिकारों की रक्षा करने और शिक्षा के माध्यम से उन्हें सक्षम बनाने के उद्देश्य से 'ह्यूमेनिटी वेल्फेयर ऑर्गनाइजेशन हेल्पलाइन' नामक एनजीओ का पंजीकरण करवाया। वर्ष 2008 में, श्री जावेद ने दिव्यांग बच्चों के लिए एक स्कूल खोला। उन्होंने विभिन्न दिव्यांगताओं वाले 200 बच्चों को औपचारिक शिक्षा प्रदान की। उन्होंने दिव्यांगजनों के लिए 100% सुगम्य विकास केंद्रों का निर्माण करवाया।

4. श्री टाक के अथक प्रयासों के फलस्वरूप उन्हें बहुत-सी उपलब्धियां प्राप्त हुईं। जिनमें से कुछ इस प्रकार हैं:— जेकेपीएससी, जेकेएसएसबी जैसी भर्ती एजेंसियों के माध्यम से और जिला स्तरीय नौकरियों में 3% आरक्षण लागू करवाना; लोक सेवा आयोग का फॉर्म भरने में शिक्षित दिव्यांग युवाओं के लिए फीस में 50% की छूट; दिव्यांग सरकारी कर्मचारियों के वाहन भत्ते को 200 रु. से बढ़ाकर 1000 रु. करवाना; जम्मू और कश्मीर के राज्यपाल की मंजूरी से पूर्णकालिक दिव्यांग आयुक्त पद का सृजन करवाना; उनके परामर्श से प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से दो लाख दिव्यांगजनों को फायदा हुआ; जम्मू और कश्मीर उच्च न्यायालय में दायर की गई जनहित याचिका के संबंध में दिव्यांगजनों के लिए ड्राफ्ट पॉलिसी तैयार करवाना तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में दृष्टि और ऊपरी अंग बाधित उम्मीदवारों के लिए लेखन सहायक का प्रावधान करवाना आदि।

5. श्री टाक को उनके योगदानों के लिए बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इनमें 2004 में दिव्यांगजनों के कल्याण के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार; जम्मू और कश्मीर यतीम ट्रस्ट द्वारा 2005–2006 में प्रदान किया गया टाक जैनागिरी स्मृति पुरस्कार; 2007 में सामाजिक सुधार और सशक्तीकरण के लिए जम्मू और कश्मीर राज्य पुरस्कार; 2007 में एनसीपीईडीपी शेल हेलन केलर पुरस्कार; ग्रामीण गैर सरकारी संस्थाओं का परिसंघ, नई दिल्ली द्वारा 2009 में प्रदान किया गया सर्वेंट ऑफ दि पुअर अवार्ड; एबिलिटी फाउंडेशन, चेन्नै, द्वारा 2009 में अवार्ड फॉर एमिनेन्स; डॉ. बत्राज पॉजिटिव हेल्थ अवार्ड 2012, नई दिल्ली; गणतंत्र दिवस 2015 की पूर्व संध्या पर जिला प्रशासन द्वारा प्रदान किया गया सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता पुरस्कार; इंडिया इंटरनेशनल फ्रेंडशिप सोसायटी, नई दिल्ली द्वारा 2015 में प्रदान किया गया भारत ज्योति पुरस्कार; तथा स्वराज विकलांगजन सेवा समिति, इलाहाबाद द्वारा 2016 में प्रदान किया गया विकलांगजन स्वाभिमान सम्मान शामिल हैं।